पशु प्रबंधन के आवश्यक कार्य

प्रतिदिन निरीक्षण : पशुपालक को प्रतिदिन पशुशाला में जाकर पशुओं का निरीक्षण करना चाहिए कि कोई पशु बीमार तो नहीं है या कोई पशु गर्मी (मदकाल) में तो नहीं है ।

देखभाल में नियमितता : प्रतिदिन, पशुओं के खाने, पीने, दूध उत्पादन में नियमितता जरूरी है क्योंकि पशु में इनकी आदत होती है, प्रतिदिन की आदतों में परिवर्तन से दुग्ध उत्पादन क्षमता में असर पड़ सकता है ।

पशु रखरखाव में सहजता : पशुओं को सदैव सहजता से पालना चाहिए, उनके प्रति दया एवं करूणा की भावना रखकर अधिक दूध उत्पादन ले सकते हैं ।

खरैरा करना : प्रतिदिन पशु के शरीर पर ब्रुश की सहायता से खरैरा करना लाभदायक रहता है । इससे उसके शरीर से धूल, मिट्टी तथा टूटे हुए बाल साफ हो जाते हैं तथा शरीर में खून का संचार अच्छा बना रहता है ।

दूध का सुखाना : गर्भ 6–7 महीने का हो, पशु से दूध की कम मात्रा निकालें फिर एक दिन छोड़ कर दूध निकालें तथा बाद में दूध निकालना छोड़ दें इस प्रकार लगभग 15–20 दिन में दूध पूरी तरह से बंद हो जाएगा ।

पशु के मदकाल की पहचान : प्रतिदिन सुबह पशुओं की जांच करें कि जो पशु गर्मी में होता है उसके योनिद्वार से लसलसा पदार्थ गिरता है, वह दूसरे पशुओं पर चढ़ता है या अपने ऊपर चढ़ने देता है । पशु बार–बार पेशाब करता है तथा चारा दाना खाना छोड़ देता हैं इन लक्षणों के दिखने पर उस पशु का कृत्रिम गर्भाधान कराना चाहिए ।

पशु के गर्भित होने की जांच : यह जरूरी है कि जैसे ही पशु को 2–3 महीने का गर्भ हो उसकी जांच पशुचिकित्सक द्वारा जरूरी है । गर्भ जांच कराने से वह उचित प्रबंधन कर सकता है ।

दूध दुहना : पशु की सफाई करने के बाद सूखे हाथ से दूध निकालना चाहिए । कोशिश करें पूरे हाथ विधि से दूध निकालें ।

पशु स्वास्थ्य कार्य :

टीकाकरण – पशुओं को संक्रामक रोगों जैसे मुहंपका खुरपका, गलगोठू आदि रोगों से बचाव के लिए आवश्यक टीके निर्धारित समय पर लगवाना चाहिए ।

पशु को कृमिरहित करना : समय–समय पर पशुओं विशेषकर छोटे–कटड़े कंटड़ियों को मिरहित करने की दवाएं पशुचिकित्सक की सलाह से दिलवाना जरूरी हैं ।

बेकार पशुओं का फार्म से हटाना : जो पशु किसी सक्रांमक रोग से पीड़ित हो, जिसकी शारीरिक वृद्धि कम हो, या पशु का दूध उत्पादन कम हो या प्रजनन संबंधी समस्या से ग्रस्त हो, ऐसे पशु को फार्म से हटाना ही ठीक रहता है ।

स्वंय का दूध पी जाना : इस बुरी आदत को रोकने के लिए गाय की नाक के पास टीन की चादर का बना टुकड़ा , रस्सी के माध्यम से सीग पर होकर बांध देते हैं जिससे गाय स्वंय का या किसी अन्य गााय का दुध नहीं पी पाती । नाक में एक छल्ला भी डाल सकतें है इस छल्ले में 2–3 अन्य छल्ले भी फिट कर सकतें हैं ।

एक पशु का दूसरे पशुओं को चाटना : इसे रोकने के लिए बछड़े को दूध पिलाने के बाद उसकी जीभ पर चुटकी भर नमक या खनिज मिश्रण लगाना चाहिए ऐसा करने से वह अन्य पशुओं को चाटनाबंद कर देगा । उसके मुहं पर रस्सी या तार की जाली का मुझीका बनाकर बांध देने से भी इस बुरी आदत को रोका जा सकता है । कोशिश करें कि बछड़ो को एक दूसरे से दूर रखें ताकि आपस में चाट न सके ।

लात मारना : इस बुरी आदत को रोकने के लिए उसकी टांगो के टखने के ऊपर 8 के आकार में रस्सी बांध दें या एक रस्सी अयन के पास पशु के शरीर के चारों ओर बांध देने से भी पशु के शरीर के चारों ओर बांध देने से पशु लात मारना छोड़ देता है ।

छोटे बछड़ों का रखरखाव : जन्म लेने के बाद बछड़े को मादा द्वारा चाटने दें ऐसा करने से मादा उसे भूलेगी नहीं और दूध पिलाएगी । इसके शरीर को बोरी के टुकड़े या भूसे आदि से अच्छी तरह साफ करें, नाक व कानों को विशेष रूप से साफ करें । एक घंटे के अंदर इसे मां का दूध अवश्य पिलाएं । उसकी नाल को पेट के नीचे, 2 इंच जगह छोड़कर धागे से बांध दें उसके नीचे नाल को साफ ब्लेड या कैंची से काटकर उस पर बेटाडिन या डिटोल लगा दें । इन्हें पेट से कीड़े निकालने की दवाई जैसे : एल्बेन्डाजोल, पिपराजीन है जो कि सरकारी पशु अस्पतालों पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं । इन्हें 4 महीने तक प्रत्येक महीने दें । छोटे कटड़े/कडड़ियों में सफेद/हरे दस्त बहुत लगते हैं जिसका प्रमुख कारण गंदगी है अतः इनके रहने की जगह की नियमित सफाई रखें । कभी भी बासी रोटी, सड़ी गली चीज न खिलाएं । दस्त लगने पर तुरंत पशुचिकित्सक से इलाज कराना चाहिए । एक महीने की उम्र के बाद, दूध के साथ–साथ हरी मुलायम पत्तियां या घास खिलाना शुरू करें बाद में भूसा या कड़वी खिलाएं, साथ ही दाने में खनिज मिश्रण 5–10 ग्राम प्रतिदिन अवश्य दें ।

जूं, चिचड़ या कलीली की रोकथाम के लिए पशओं को साफ रखें । साफ मौसम होने पर नहलाएं तथा खरैरा करें इन परजीवियों के होने पर पशुचिकित्सक से सलाह लेकर कीटनाशकों के घोल से नहलाएं । सर्दी के मौसम में इनके शरीर के ऊपर बोरी या कंबल डालकर रखें । अधिक ठंड में इनके बाल नहीं काटें । संकर नस्ल की बछिया को 1 महीने के अंदर सींग रहित करा लें । सींग रहित कराने से पशु का व्यवहार हिसंक नहीं होता तथा सींग टूटने या सींग के कैसंर आदि का खतरा समाप्त हो जाता है । तीन महीने की उम्र पर मुहंपका खुरपका रोगा का टीका लगवा दें तथा फिर प्रतिवर्ष लगवाएं । नाल से दवा या सरसों का तेल आदि देते समय इनकी जीभ न पकड़े जीभ पकड़ने से दवा सीधे फेफड़ों में जा सकती है जिससे इनकी मृत्यु भी हो सकती हैं । कोशिश करें दवा, गुड़ या आटे में मिलाकर गोलीर के रूप में दें ।

गर्मी के मौसम में ताजा पानी, दिन में 3 बार अवश्य पिलाएं । छायादार जगह पर रखें । जब भी कटड़ा सुस्त दिखाई दे तो तुरंत पशुचिकित्सक की सलाह लें ।

पशुओं की आहार व्यवस्था

सूखा चाराः–गाय भैंस अपने वनज का 2–3 प्रतिशत् तक सूखा पदार्थ पचा सकती है। इसकी ज्यादातर मांग सूखे चारे से पूरी होती है। दूसरे सूखा चारा पशु के पेट को भरने में मदद करता है। जिससे उसकी भूख शान्त होती है। गायों भैंसों को कई प्रकार के सूखे चारे खिलाये जाते हैं। उनमें गेहूँ का भूसा प्रमुख है यद्यपि इसकी पौष्टिकता नही ंके बराबर होती है, परंतु इससे पशु का पेट भर जाता है। अन्य सूखे चारों में ज्वार, बाजरा की कड़बी, धान का पुआल एवं दालों वाली फसलों का भूसा शामिल हैं।

1. **हरा चाराः–**

   हरे चारे से पशु के शरीर को प्रोटीन, शर्करा विटामिन्स तथा लवण मिलते हैं, इसके अतिरिक्त हरे चारे से पशु का पेट भर जाता है और उसकी भूख शान्त होती है। खेतों में उगाये जाने वाले हरे चारे दो प्रकार के होते हैं। पहला दलहनी चारा तथा दूसरा बगैर दालों वाली चारा फसलें। दलहनी चारे से विटामिन्स के अलावा प्रोटीन एवं अन्य तत्व भी मिलते हैं, दूसरे प्रकार के चारे से कार्बोहाइड्रेट (शर्करा) ही मिलती है। पशु को दोनों प्रकार के चारे मिलाकर देना चाहिए जैसे सर्दी के मौसम में बरसीम या रिजका के साथ जई मिलाकर खिलाना चाहिए। बरसीम, रिजका के साथ चीनी सरसों का चारा अपयुक्त रहता है। गर्मी के मौसम में ज्वार के साथ लोबिया या मक्का मिलाकर पशुओं को खिलाने से उन्हें अधिकतर पौष्टिक तत्व मिल जाते हैं। यदि 8 लीटर दूध देने वाली गाय को इस तरह का चारा दिया जाये तो उसे दाने की आवश्यकता नहीं होती। हरा चारा शरीर को पौष्टिक तत्व प्रदान करने के अतिरिक्त पाचन नली को साफ करने में मदद करता है तथा चारे से भूख व स्वाद में वृद्धि होती है।

2. **दानाः–**

   सूखे एवं हरे चारे से पशुओं की उत्पादन आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए उन्हें दाना देना जरूरी होती है। दाना कुछ अनाजों, खली, लवण एवं नमक का मिश्रण होता है। एक संतुलित दाने में आवश्यकता अनुसार प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा एवं लवण होने चाहिए ताकि पशुओं का शरीर बना रहे और उनकी उत्पादन क्षमता का अधिकतम उपयोग किया जा सके।

   दूधारू पशुओं को दिये जाने वाले दाने में 45–50 प्रतिशत् अनाज (गेहूं, जौ, जई, मक्का, बाजरा) 30–35 प्रतिशत् खली (सरसों, मूंगफली, तिल, बिनौला) 20 प्रतिशत् चोकर, 2 प्रतिशत् खनिज मिश्रणा तथा 1 प्रतिषत नमक होना चाहिए।

कुछ दानों को निम्न अवयवों को मिलाकर पशु आहार घर पर बना सकते हैं।

1. जई 30 कि.ग्रा., चना 36 कि.ग्रा., मूंगफली खल 20 कि.ग्रा., चोकर 10 कि.ग्रा., लवण मिश्रण 02 कि.ग्रा. तथा नमक 01 कि.ग्रा.।
2. मक्का 40 कि.ग्रा., चना 35 कि.ग्रा., मूंगफली खल 18 कि.ग्रा., चना छिलका 04 कि.ग्रा., खनिज मिश्रण 02 कि.ग्रा., तथा नमक 01 कि.ग्रा.।
3. मक्का 30 प्रतिशत्, चना 27 प्रतिशत्, चावल का चोकर 10 प्रतिशत्, बिनौला 20 प्रतिशत्, मूंगफली की खली 10 प्रतिशत्, खनिज मिश्रण 02 प्रतिशत्, तथा नमक 01 प्रतिशत्।

दाने को खिलायी जाने वाली मात्रा पशु की उम्र तथा उत्पादन स्तर पर निर्भर करती है।

पशुओं की प्राथमिक चिकित्सा

दुर्घटनाएं : खून का बहना : जिस हिस्से से खून निकल रहा हो उस स्थान के 2–3 सेमी. ऊपर व नीचे कस कर बांध देना चाहिए यदि बांधना संभव नहीं हो तो ऐसी स्थिति में तहकर मोटा किए कपड़े को फिटक्री के घोल में भिगोकर कटे हुए स्थान पर जोर से दबाकर रखना चाहिए । उस जगह पर बर्फ या ठंडे पानी को लगातार डालकर भी खून रोका जा सकता है ।

हड्डी का टूटना : टूटी हड्डी को हिलने डुलने से बचाने के लिए आवश्यक है कि उन्हें बांस की खपच्चियों से बांध दिया जाए । टूटी हड्डी यदि खाल से बाहर निकल आई हो तो उसे साफ कपड़े से ढक देना चाहिए और पशुचिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए ।

घाव होना या चोट लग जाना : दोनों ही हालत में बर्फ या ठंडे पानी से चोट की सिकाई करने पर प्रायः फोड़ा नहीं बनता । जब चोट पुरानी हो जाती है तो गर्म पानी से सिकाई करना लाभदायक होता है । खुली हुई चोट यदि साधारण हो तो उसे साफ कर कोई भी एंटीसैप्टि क क्रीम लगाना चाहिए । यदि खून बह रहा हो तो टिचर बैंजोइन लगाना फायदेमंद होगा ।

जलना या फफोले पड़ना : सबसे पहले आग बुझाकर जले भाग पर ठंडा पानी डालना चाहिए बाद में जैतून व नारियल का तोल का लेप करें । जले हुए भाग पर चूने का पानी व अलसी का तेल बराबर भाग में मिलाकर लगना उत्तम रहता है ।

आपातकालीन स्थितियां : गले में कुछ अटकना : कई बार पशु बड़े आकार के खाद्य जैसे सेब, आलू, गाजर आदि निगल लेते हैं जो खाद्य नली को पार नहीं कर पाते और गले में अटक जाते हैं । ऐसी हालत में पशु के मुंह से लार टपकती है, बेचैन रहता है तथा पेट भी फूल जाता है । ऐसी वस्तु का पता लगाकर दबाकर तोड़ने को कोशिश करनी चाहिए प्रायः टूटने पर वह पेट में चली जाती है यदि न टूट पाये तो पशुचिकित्सक को बुला लेना उचित होगा ।

अफारा : पेट फूलने की स्थिति में काला नमक 100 ग्राम, हींग, 30 ग्राम, तारपीन का तेल, 100 मिली. व अलसी का तेल 500 मिली. मिलाकर देने से लाभ होता है ।

बेहोश हो जाना : सिर में चेट लगने, पानी में डूबने, धुंए से दम घुटने, विद्युत करंट का झटका लगने, हृदय का धड़कना कम या ज्यादा होना, हृदयगति रूकने की स्थिति में कई बार पशु बेहोश हो जाता है । अधिकतर स्थितियों में कृत्रिम सांस देना लाभकारी होता है । सिर में चोट लगने पर ठंडे पानी की पट्टियां सिर पर रखने से लाभ मिलता है । करंट लगने पर पैर व छाती की मालिश करना व पशु को गर्म रखना चाहिए । यदि कुछ समय पश्चात पशु पानी पीने की स्थिति में हो तो उसेनमक व गुड़ मिलाकर खिलाना अत्यंत लाभदायक होगा ।

सांप के काटने पर : जिस भाग पर सांप ने काटा हो उसके 3 इंच ऊपर पतली डोरी से कस कर बांध देना चाहिए । काटे हुए स्थान पर नए ब्लेड से चीरा लगा देना चाहिए ताकि खून के साथ विष भी निकल जाए । पशु को शांत वातावरण में रखें ।

पागल कुत्ते द्वारा काटना : काटे हुए स्थान को साबुन से कई बार धोना चाहिए । रोगी पशु को पशुचिकित्सक से मिलकर 15 टीके अवश्य लगवायें ।

जहरीली दवा पीना : जहरीले पौधे, कीटनाशक, यूरिया, चूहेमार दवा, साइनाइड युक्त चारे जैसे ज्वार आदि खाने से पशु को जहरबाद हो जाता है । ऐसी स्थिति में पशु को अधिक से अधिक पानी पिलाएं । मैगनीशियम सल्फेट 400 ग्राम, छोटे पशु को 100 ग्राम, पानी में घोलकर पिलाएं । अरंण्डी का तेल 500 मिली., 1 लीटर दूध में मिलाकर देने से दस्त के साथ विष निकल जाता है ।

आंख में कुछ गिर जाना : ऐसी स्थिति में साफ रूई या कपड़े से कीचड़ या अन्य चीज की आंख से निकालें या शीघ्र ही ताजे पाने से आंख धोएं । यदि संभव हो तो बोरिक पाऊडर के घोल से आंख की धुलाई करें ।

लू लग जाना : लू लगने पर पशु को ठंडे स्थान पर रखें । पशु के सिर व शरीर पर ठंडा पानी डालें । ठंडे पानी में तैयार किया हुआ चीनी, भुने हुए जौ का आटा व थोड़ा नमक बराबर पिलाते रहना चाहिए । पशु को पोदीना, प्याज का अर्क बनाकर देना अति लाभकारी है ।

स्वच्छ दूध उत्पादन तकनीक

स्वच्छ दूध उत्पादन, डेयरी फार्म का एक महत्वपूर्ण कार्य हैं ।

दूध निकालने की तैयारी : पशुशाला की अच्छी तरह सफाई करें । । दूहने के पूर्व पशुओं को खरैरा लगाना चाहिए । अयन को जीवाणुनाशक घोल से स्व्च्छ कपड़े को भिगोकर पौंछ लेना चाहिए । दूध निकालने वाले व्यक्ति को साफ कपड़े पहले होना चाहिए । नाखून कटे हों और सिर पर कपड़ा या टोपी पहने होना चाहिए । दूधिया के हाथ साबुन से धोना जरूरी है । कोशिश करें कि दूध निकालने के समय पशु को दाना खिलाएं । दूध निकलने के स्थान पर समुचित प्रकाश एवं हवा के आवगमन की व्यवस्था होनी चाहिए तथा जल निकास का उचित प्रबंध हो ।

दूध पूर्ण हाथ की विधि से निकालें जो कि सर्वोत्तम मानी गई है । दोहन किया शीघ्रता से एवं पूर्णतया से करना चाहिए । दूध निकालते समय शुरू में प्रत्येक थन से 2–3 बार धार अलग बर्तन या नीचे जमीन पर निकाल देना चाहिए इससे थन नालिका में उपस्थित जीवाणुओं से छुटकारा मिल जाता है तथा अयन में थनैला रोग की भी जांच की जा सकती है । दूध दुहकर तुरंत दूध कैन, जिस पर छानने के लिए मलमल का कपड़ा बंधा होता है डालकर उपयोग हेतु उचित स्थान पर यथाशीघ्र पहुंच देना चाहिए ।

दूध दोहने की विधियां :

1. चुटकी द्वारा दूध दोहना :

इस विधि में थन की जड़ को अगूंठा और उसके पास की दो अंगुलियां के बीच मजबूती से पकड़ा जाता है उसके बाद थन की उसी सिथति में नीचे की तरफ खींचते हैं और ऊपर से नीचे की तक हाथ को खिसकतो हुए दूध की धार निकालते हैं । इस विधि को जब प्रयोग किया जाता है जब पशु के थन छोटे–छोटे होते हैं ।

2. पूर्ण हाथ दोहन विधि :

इस विधि में थन को अगुलियों से चारों ओर से घेर कर मुट्ठी द्वारा दूध निकाला जाता है । इस विधि में थन के ऊपर समान दबाव पड़ता है और पशु को दर्द भी नहीं रहता, साथ ही साथ थन का खराब होने का भी डर नहीं रहता । इस विधि में हाथ की मूठ एक ही स्थान पर रहती है ।

3. अगूठा दबाकर दूध निकालना :

इस विधि में थन को चारों ओर से अगुंलियों एवं मुड़े हुए अंगूठे के बीच दबाकर दूध निकालते हैं । यह विधि अच्छी नहीं है क्योंकि इस प्रकार से दूध निकालने से थन को नुकसान पहुंचता है । हाथ के असमान दबाव के कारण थन में गांठ पड़ने की संभावना रहती है ।

4. मशीन द्वारा दूध दुहना :

अधिक दूध देने वाली गायों के लिए एवं उन फार्मों पर जहां अधिक संख्या में गायें होती है वहां मशीन से दूध निकाला जाता है । मशीन द्वारा निर्वात (वेक्यूम) उत्पन्न किया जाता है जिसके फलस्वरूप थनों से दूध निकालकर कैन में एकत्रित हो जाता है । मशीन से फायदा यह है कि दूध शीघ्रता से निकलता है तथा अधिक से अधिक गायों को कम समय में दुहा जा सकता है, कम श्रम लगता है एवं स्व्च्छ दूध आसानी से प्राप्त हो जाता है ।

गर्मियों में पशुओं की देखभाल एवं प्रमुख रोग

ध्यान रखें कि पशु धूप में बंध न रहे जाय, उसे छाया में पेड़ के नीचे या पशु घर के अंदर रखें । अच्छा रहेगा कि पशुघर के आसपास छायादार पेड़ लगायें, इससे पशुघर में फर्श आरमदायक रखें । अधिक गर्मी होने पर पानी का छिड़काव करें । छत की ऊंचाई 10 फीट से ऊपर रखें यदि छत टीन की हो तो उसके ऊपर ज्वार/बाजरा के पूले अथवा छप्पर बनाकर रखें ऐसा करने से पशुघर ठंडा रहता है ।

पशु को ताजा पानी पिलाएं दिन में 3/4 बार ताजा पानी पिलाना जरूरी है । गर्मी अधिक होने पर पशु को 1 से 2 बार नहलाएं । भूसे व दानों को खिलाने से पहले भिगोकर रखें ऐसा करने से भोजन आसानी से पच जाएगा ।

हरे चारे का अपना अलग महत्व है, मार्च अप्रैल में मक्का, लोबिया, चरी, बाजरी बो देनी चाहिए ताकि मई जून में इनका चारा पशुओं को मिल सके ।

गर्मी के दिनों में पसीने के द्वारा पशु के शरीर से कुछ पोषक तत्व विशेषकर नमक बाहर निकलते रहते रहते हैं इसकी पूर्ति के लिए खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिनप्रति पशु देना चाहिए ।

छोटे कटड़े कटड़ियों का विशेष ध्यान रखें उनके पेट में कई तरह के कीड़े पड़ जाते हैं उनको बाहर निकालने की दवाएं जैसे पिपराजीन, एल्बेन्डाजोल प्शुचिकित्सक की सलाह से नियमित रूप से दें ।

गर्मियों में पशुओं के शरीर पर चीचड़, जूं, कीलनी आदि परजीवी हो जाते हैं, उनसे छुटकारे के लिए कई प्रकार के कीटनाशकों का इस्तेमाल पशुचिकित्सक की सलाह से ही करें । यदि पशु को इनके प्रकोप से बचा सकते हैं ।

गर्मी के दिनों में कई तरह के रोग भी पशुओं को लगते हैं उनमें प्रमुख निम्न हैं :–

1. **गर्मी/लू लगना :–** यदि किसी भी कारणवश पशु धूप में रह जाय या लू लग जाय तो पशु गर्मी का शिकार हो जाता है

उपचार :– ऐसे पशु को तुरंत छायादार व हवादार जगह पर बांधे, ठंठे पानी से नहलाएं, सिर पर गीला कपड़ा लपेटैं और तुरंत पशुचिकित्सक की सलह लें ।

2. **दस्त :–** गर्मी में दस्त काफी लगते हैं पशु पतला गोबर करता है भूख कम हो जाती है दूध उत्पादन भी कम हो जाता है ।

उपचार :– सफाई का ध्यान रखें । सड़ा गला चारा दाना न खिलाएं । खाने की नांद को साफ रखें । पशु को चावल का मांड ठंडा करके पिलाएं तथा पशु चिकित्सक से संपर्क कर इलाज कराएं ।

3. **मुंहपका खुरपका :–** यह एक तेजी से फैलने वाला रोग है जो एक प्रकार के विषाणु द्वारा होता है इसके प्रकोप से पशु के मुंह व जीभ पर छाले पड़ जाते हैं, खुरों के बीच की जगह पर घाव बन जाते हैं । पशु को बुखार हो जाता है चारा दाना नहीं खा पाता, मंह से लार टपकती रहती है, पशु लंगड़ा कर चलता है दूध उत्पादन एकदम कम हो जाता है । कई दिनों तक इस रोग का प्रकोप रहता है । यदि समय पर इलाज न हो पाए तो पशु के खुरों के बीच में कीड़े पड़ जाते हैं तथा खुर भी त्वचा से अलग हो जाते हैं और पशु महीनों तक लंगड़ा कर चलता है ।

उपचार :– पशु के मुंह को पोटेशियम परमेंगनेट के हल्के घोल से दिन में दो बार धोएं तथा बोरोगिलसरीन लगाएं । खुरों के बीच फिलाइल का इस्तेमाल करें, पशु को हरा नरम चारा खाने को दें । गेहूं का दलिया उबालकर पतला करके पशु को दें तथा पशुचिकित्सक से सलाह लेकर उचित इलाज कराएं ।

बचाव :– साल में इस रोग के बचाव का टीका दो बार, छः महीने के अंतराल पर लगवाने से रोग से बचाव हो जाता है ये टीके सभी पशु अस्पतालों द्वारा पशुओं को निःशुल्क लगाएं जाते हैं ।

4. **थनैला रोग :** यह रोग मुख्यतः गंदगी के कारण होता है जिससे अनेक तरह के कीटाणु थन के अंदर घुसकर संक्रमण करते हैं इसकी वजह से पशु के अयान व थनों पर सूजन हो जाती है । थन से मवाद खून या फटा दूध निकलता है, पशु को दर्द महसूस होता है एक थन से संक्रमण दूसरे थन में भी जाने का अंदेशा रहता है ।

रोकथाम :–पशु की सफाई अच्छी तरह से करे दूध निकालते समय थन व अयन को लाल दवा के पानी से धोएं । दूध निकालने से पहले हाथ साबुन धोएं । दूध का बर्तन साफ व सूख हो तथा दूध निकालते वक्त सामने न खांसें ।

पशुओं में प्रजनन संबंधी रोग, प्रबंधन

प्रजनन रोगों की रोकथाम

1. जन्म के प्श्चात कटड़ी या बछड़ी को उचित मात्रा में दूध दें । समय–समय पर पेट के कीटों की दवा दिलवाते रहें । 4 महीने की उम्र के बाद संतुलित आहार दें जिसमें हरा चारा अवश्य दें । दाने में उचित मात्रा में कार्बोहाईडेट, प्रोटीन, वसा, खनिज मिश्रण, विटामिन एवं नमक होना चाहिए । पशुओं का रखरखाव उचित रखने एवं संक्रामक रोगों के टीके लगवाकर उन्हें स्वस्थ रख सकते हैं ।
2. जब पशु ब्याये तब उसको छेड़े न हीं, समस्या होने पर योग्य पशु चिकित्सक से सहायता ले ।
3. ब्याने के पश्चात यदि छटाव की जगह मवाद या खून आये तो योग्य पशुचिकित्सक से इलाज लें ।
4. पशुपालक को चाहिए कि जब पशु गर्मी में आये और बच्चा दें, उन तारीखों को डायरी में लिखें ताकि प्रजनन संबंधी आवश्यक ध्यान रखा जा सके ।
5. जब पशु गर्मी में आता है तो बेचैन रहता है, बार–बार पेशाब करता है, योनि द्वार से लसलसा द्रव निकलता है तथा दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने देता है आदि लक्षण होते हैं । गर्मी के दिनों में विशेषकर भैंसों में ये लक्षण या तो दिखाई नहीं देते या बहुत कम दिखाई देते हैं । पशुपालक को चाहिए कि पशु गके ब्याने के 2 महीने बाद रोग सुबह पशु पर नजर रखें क्योंकि गर्मी के लक्षण सुबह–सुबह दिखाई देते हैं । लक्षण दिखाई देने के बाद गर्भाधान करवाना चाहिए । भैंसों में गर्मी कम समय रहती है अतः लक्षण दिखने के बाद गर्भाधान करवा लें परंतु गायों में 10–12 घंटे बाद गर्भाधान करवायें ।
6. गर्भाधान कराने के 20–21 दिन बाद यदि गर्मी के लक्षण न आये तो समझें कि पशु के गर्भ ठहर गया है । ऐसे पशु का 60 दिन के बाद पशु चिकित्सक से गर्भ ठहरने की जांच करवा लें । पशु के गर्मी के लक्षण पुनः 21 दिन बाद खिाई देंतो कृत्रिम गर्भाधन करवायें या दूसरे सांड से गर्भाधान करवायें । यदि पशु बार–बार गर्मी में आ रहा है अथार्त गर्भ न ठहर रहा हो तो ऐसे पशु की जांच पशु चिकित्सक से करवाकर पहले इलाज करायें, फिर गर्भाधान करवायें ।
7. बूढ़े या कम उत्पादन वाले पशुओं को बदल दें और अच्छी नस्ल की बछिया रखें जो पहली बार ब्याई हो ।
8. आजकल सभी राजयों में पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा है अतः अपने पशु का वहां गर्भाधान करवायें ।
9. संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण करायें ।
10. यदि पशु प्रजनन की समस्या हारमोन की वजह से है तो उचित मात्रा में हारमोन देकर निकराकरण कियाज ा सकता है ।
11. पशु के प्रजनन अंगों में मवाद, खून आदि खिाई दे तो योग्य पशुचिकित्सक से परामर्श कर इलाज करायें ।

पशुओं में मुंहपका एवं खुरपका रोग

लक्षण :

बीमारी के शुरू होते ही पशु के शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है जो कुछ दिन तक रहता है उसके बाद मुंह के अंदर छाले बनने शुरू हो जाते हैं, पशु की भुख खत्म हो जाती है तथा दूध देने वाले पशु का दूध उत्पादन एकदम कम हो जाता है । पशु के खुरों के बीच में घाव हो जाते हैं, कभी–कभी छाले, अयन तथा थनों पर भी हो जाते हैं । मुंह में छालों की वजह से पशु खा नहीं पाता है उसके मुंह से लार गिरती रहती है ।

उपचार :

बीमारी होने पर पशु के मुंह को लाल दवा, एक्रीफ्लेबिन अथवा फिटकरी के हल्के घोल से रोजाना दिन में दो बार धोना चाहिए । मुंह के छालों, जीभ आदि पर बोरोग्लिसरीन लगानी चाहिए । पैरों के घावों पर नीला थोथा (कापरसल्फेट) का एक प्रतिशत का घाल लगाना चाहिए । फिनाइल में बराबर मात्रा में सरसों का तेल मिलाकर खुरों के घावों पर लगाने से घाव जल्दी भर जाते हैं तथा कीड़े पड़ने का डर भी नहीं रहता है । अगर बीमार पशुओं की संख्या ज्यादा हो तो जमीन में एक उथला गढ़हा करके उसके फिलाइन का घोल अथवा नीला थोथा का घोल भर कर पशुओं को उसमें होकर गुजारते हैं जिससे उनके खुरों पर दवा लग जाती है । अगर थनों पर छाले पड़ गए है। तो उनपर बोरिक ऑइंटमेंट लगाएं । गंभीर हालात में पशुओं को विटामिन ए के इंजेक्शन लगवाने चाहिए उससे घाव जल्दी भर जाते हैं । पशु को सूखे भूसे की जगह नरम हरा चारा खिलाना चाहिए तथा गेहूं का दलिया उबालकर और उसमें गुड़ डालकर पतला करके पशु को देना चाहिए ।

बचाव :

मुंहपका खुरपका बीमारी का बचाव ही इसका असली इलाज है । इसके लिए भारतवर्ष में इस बीमारी का टीका हर पशु अस्पताल में उपलब्ध है । साल में दो बार इस टीके को लगवा लेने से बीमारी का प्रकोप नहीं होता । पशुपालकों को प्रति वर्ष यह टीका सभी पशुओं को लगवा लेना चाहिए ।

पशुओं में गलघोंटू रोग

गलघोंटू एक तेजी से फैलने वाली जीवाणु जनित बीमारी हैं, जिसमें मृत्यू दर 100 प्रतिशत तक पाई गई है। बीमारी का प्रकोप गायों की अपेक्षा भैंसों में ज्यादा पाया जाता है।

रोग का प्रकोप बरसात शुरू होने के बाद होता है। गर्मियों में पशुओं की शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता काफी कम हो जाती हैं, क्योंकि इन दिनों चारे की कमी होती है तथा अधिक गर्मी होती है। बरसात होने के बाद अधिक आर्द्रता बढ़ती है और जीवाणु इस वातावरण में पनपने लगता है और एकदम तेजी से एक पशु से दूसरे पशु में फैलाता है।

रोग के लक्षणः

पशु को तीव्र बुखार (104 से 108 डिग्री फा.) हो जाता है जिससे पषु सुस्त हो जाता है। भूख खत्म हो जाती है, तथा कोने में खड़ा रहता है। उसके बाद सिर, गले व गर्दन पर सूजन हो जाती है। लार टपकती रहती है तथा निगलने में मुश्किल आती है। कई बार जीभ पर भी सूजन आ जाती है और पषु बार–बार मुंह से जीभ बाहर निकालता रहता है। गले में सूजन की वजह से सांस लेने में दिक्तत आती है। कभी–कभी नाक से खून आने लगता है। शुरूआत में पशु को कब्ज होती है बाद में दस्त शुय हो जाते हैं। निमोनिया बन जाता है, सांस नहीं ले सकने के कारण पशु की मृत्यु हो जाती है। बीमारी इतनी तेजी से बढती है कि 6–7 घंटे में पशु की मृत्यु हो जाती है। अक्सर 24 घंटे के भीतर पशु मरा हुआ मिलता है।

उपचारः

ज्यादातर पशुओं में उपचार का समय ही नहीं मिलता और मृत्यु हो जाती है। यदि शुरू के क्षणों में पषु को सल्फामेथाजिन, सल्फाडिमिडीन, सल्फामेरजिन के इंजेक्षन नस द्वारा दिये जायें तो इलाज संभव है। टेरामाइसिन, आरेमाइसिन, क्लोरोमाइसिटीन आदि एन्टीबायोटिक दवाएं भी दी जा सकती है।

बचावः

बीमारी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। रोग से बचने का सही उपाय यह है कि पषुओं को बरसात शुरू होने से एक महीने पहले गलघोटू का टीका लगवा लेना चाहिए। यह टीका हर साल लगवा लेना चाहिए।